

30.10.25

कबीर बाड़ी व बाड़ी स्वेपु ठुण/
का-का अग्रज लमई भई लिखता
बाड-बाड़ी अग्रज बाजि-अग्रज पैली
खाकि लिपि जात है पञ्चपञ्च फिल
भुमा है मन्त्र ते कप है का
तकलील जात दाजिल दमर है

॥
अग्रज बाजि
दमर

न

ड

न

नू

मी

ल